परदेस और हिंदी

भारत के बहुसंख्यक लोगों द्वारा बोली-समझी जाने वाली भाषा हिंदी का उत्कर्ष व प्रसार वैश्विक घटनाक्रम के कारण बेहद रोचक बनकर हमारे समक्ष प्रस्तुत होता है ।

उपनिवेशवादी दौर में इस देश की भाषा, संस्कृति व सामाजिक यथार्थ को समझना शासकों की मजबूरी थी । इस कारण हिंदी भाषा व उसके व्याकरण को प्रारंभिक अकादमिक स्वरूप मिला । इसी प्रकार इस समय श्रमिक शक्ति के रूप में दुनियां के विभिन्न हिस्सों में ले जाए गए हिंदी भाषियों के हिंदी-लगाव के कारण हिंदी दूर-दूर तक फैली ।

स्वतंत्रता के बाद विश्व के सबसे बड़े गणतंत्र की इस भाषा में विश्व-समुदाय की स्वाभाविक अभिरूचि के कारण जहां हिंदी के साहित्य का अनुवाद आदि हुआ वहीं दुनियां के कई शिक्षण केंद्रों में इसके गंभीर पठन-पाठन का सिलसिला भी शुरु हुआ । इस सिलसिले को मुक्त विश्व की परिकल्पना ने और अधिक बल प्रदान किया। उपर्युक्त कारणों तथा भाषा के प्रति रुझान की वजह से एक अरसे से दुनियां के भिन्न-भिन्न कोनों से हिंदी में अनेकानेक पत्र-पत्रिकाएं निकलती रहीं।

यह खंड इन्हीं रोचक तथ्यों को संक्षेप में प्रस्तुत करने का प्रयास है।

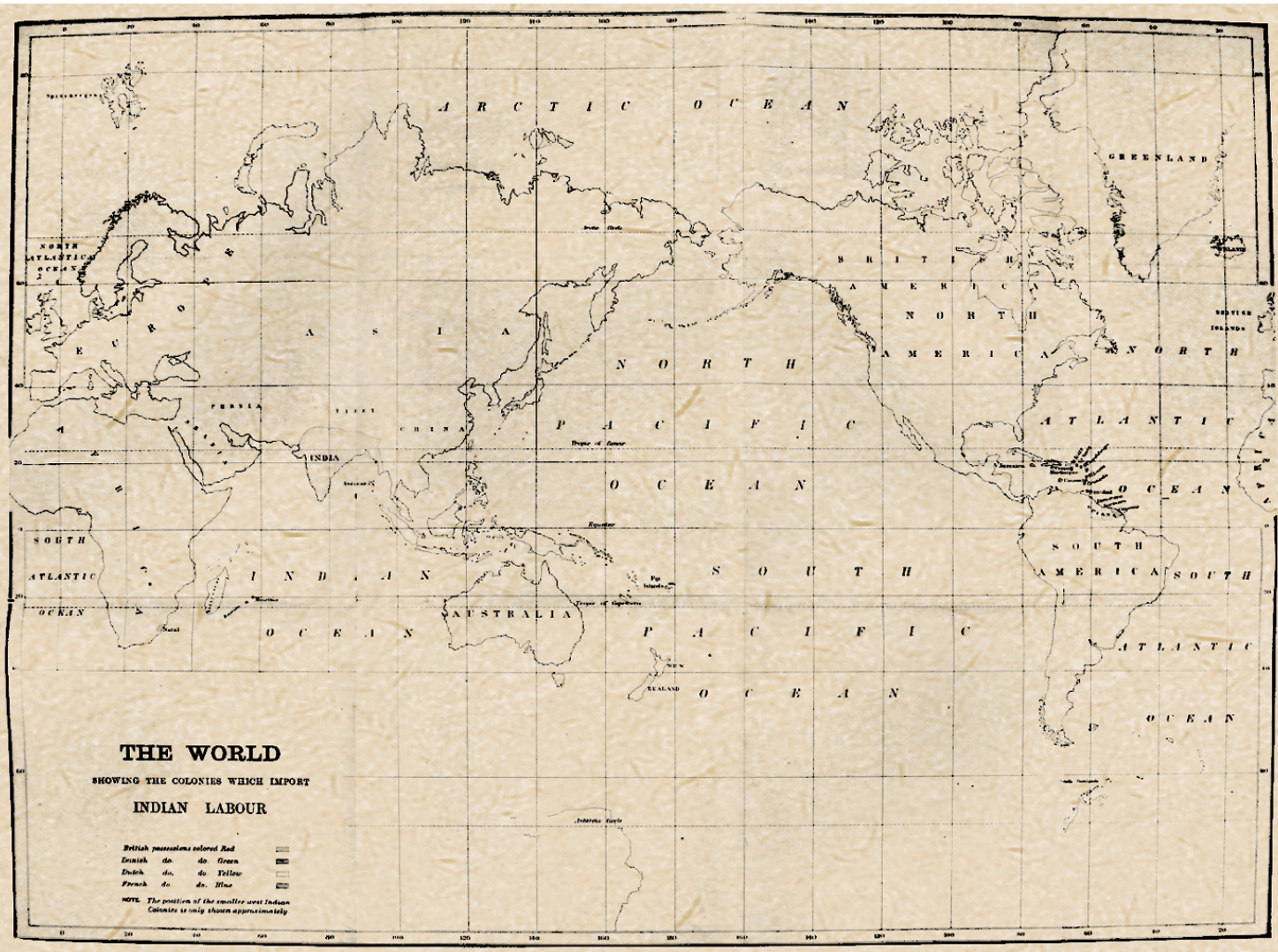

विश्व के विभिन्न देशों में गए भारतीय श्रमिकों को दर्शाता मानचित्र, 1883

Map depicting migration of Indian labourers worldwide from all over India.

Plate 5

Main Areas of Recruitment in India

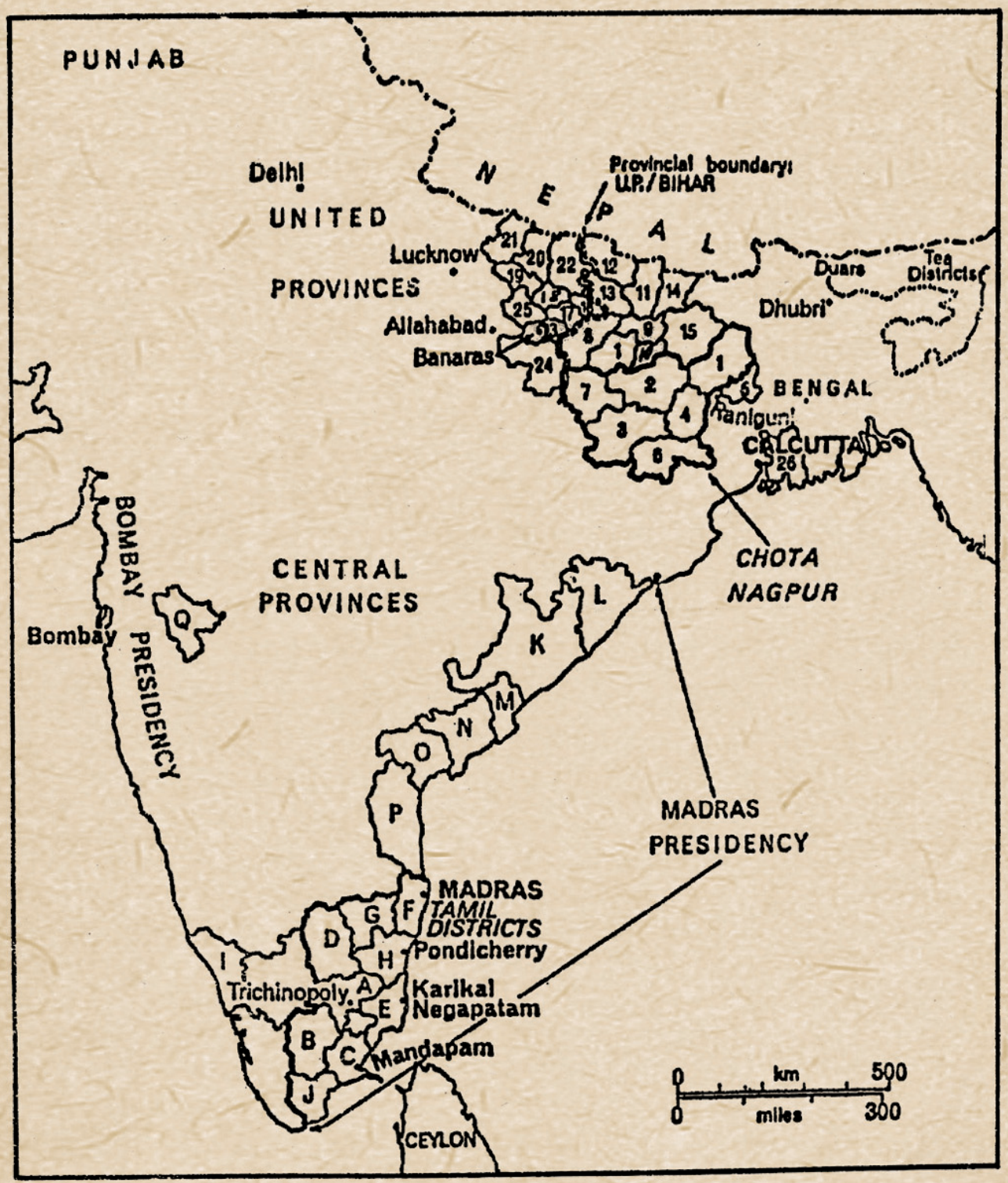

भारत के विभिन्न इलाकों से विदेशों में गये भारतीय श्रमिकों की भर्ती को दर्शाने वाला एक चित्र

Cover page of the trilingual agreement issued by British authorities for Indian workers, 1903.

Overseas Indians.

The "Indian Review" gives the following table of the numbers of Indians in various parts of the Empire. The year given after each is the date of the census on which the figure is based.

	Number	Year
Ceylon	820,000	1926
British Malaya	660,000	1926
Hong Kong	2,555	1911
Mauritius	264,527	1921
Seychelles	332	1921
Gibraltar	50	1920
Nigeria	100	1920
Kenya	26,759	1926
Uganda	5,604	1921
Nyasaland	515	1921
Zanzibar	12,841	1921
Tanganyika	9,411	1921
Jamaica	18,401	1922
Trinidad	121,420	1921
British Guiana	124,938	1921
Fiji Islands	60,634	1921
Basutoland	179	1911
Swaziland	7	1911
N. Rhodesia	56	1921
S. Rhodesia	1,250	1921
Canada	1,200	1920
Australia	2,000	1922
New Zealand	606	1921
Natal	141,330	1921
Transvaal	13,405	1921
Cape Colony	6,498	1921
Orange Free State	100	1921
U.S. of America	3,175	1910
Madagascar	5,272	1917
Reunion	2,194	1921
Dutch East Indies	50,000	Unknown.
Surinam	34,957	1920
Mozambique	1.110	Unknown.
Persia	3,827	1922
Total	2,395,249	

It is interesting to note that Fiji comes seventh on the list. Why, then, have the Indians of Kenya, though far fewer in number, obtained the Franchise years ahead of Fiji? Do we take no interest in politics?

ब्रिटिश एवं अन्य उपनिवेशों को गये भारतीय श्रमिकों की स्थिति दर्शाने वाली तालिका, 1842-1883

Conditions of Service.

Period of Service.
Five years.

Nature of Labor.
Agriculture.

Number of days in which the Emigrant is required to work in each week.
Six days in the week, Sundays and Holidays excepted.

Number of hours in each day during which the Emigrant is required to labor without extra remuneration.
Nine hours between sunrise and sunset.

Monthly or daily wages or task work rates.

Besides free rations
For men of 18 and upwards minimum rate as follows:—

First year	10 shillings	monthly	equal to	Rs. 8	0	0.
Second "	11	"	"	9	0	0.
Third "	12	"	"	10	0	0.
Fourth "	13	"	"	11	0	0.
Fifth "	14	"	"	12	0	0.

The women are paid half wages & minors in proportion.

Other conditions if any.
Free house to live in and medical attendance.
Ration for an adult as mentioned below.

1½ lbs (4⅛ ollocks) of rice daily, or for 3 days in the week, in lieu of rice, 2 lbs. (5½ ollocks) of maize meal.

Doll	2 lbs. (5½ ")	per month.
Salt	1 lb. (2¾ ")	"
Salt fish	2 lbs. (26½ polls.)	"
Ghee or oil	1 lb (13¼ ")	"

Immigrants under 12 years of age will receive three-fourths of the above rations.

Conditions as to residence in Natal and return Passages to India.

The Emigrant shall be entitled to a free return passage to India after having completed a residence of five years in Natal of industrial service under indenture. The Emigrant shall not leave Natal without a written license, no license to leave the Colony shall be granted to any Emigrant who has not completed five years residence in Natal unless under a written order of the Indian Immigration Trust Board for his or her return to India.

After the expiration or other determination of the contract the Emigrant shall either return to India or remain in Natal under indentures to be from time to time entered into: Provided that each term of new indentured service shall be for two years. And provided further, that the rate of wages for each year of indentured service after that provided by this contract shall be 16s per month for the first year, 17s. per month for the second year, 18s. per month for the third year, 19s. per month for the fourth year, and 20s. per month for the fifth and each succeeding year.

Every Indian desiring to return to India on the expiry of the first or any subsequent period of his service under any contract of indenture or re-indenture entered into under the Laws for the time being in force, shall be provided by the Indian Immigration Trust Board with a free passage to India.

Any Indian Immigrant who may have entered into the covenant set out in Section 2 of this Act, shall be at liberty, subject to the approval of the Protector of Indian Immigrants, to choose the employer to whom he shall be indentured after his first term of service and for the purpose of making such choice the Indian Immigrant shall be entitled to a pass for one month to be issued by his last Employer, or should the Employer refuse such pass, then by the Magistrate of the District.

During all the period of re-indenture each Indian Immigrant entering into such further indenture shall have all the rights and privileges which he had during his first term of indenture.

Every indentured Indian who shall have entered into the covenant set out in Section 2 of this Act and who shall fail, neglect, or refuse to return to India or to become re-indentured in Natal shall take out year bpy year a pass or license to remain in the Colony to e issued by the Magistrate of his District, and shall a y for such pass or license a yearly sum of Three Pounds Sterling.

कब तक काम करना होगा।
पांच बरस।

क्या काम करना होगा।
खेती बारी।

हफ्ते में कितने दिन कुली को काम करना होगा।
हफ्ता में छः दिन इतवार और छुट्टी के दिनों को छोड़ के।

बिना ऊपरी मजूरी के दिन में कितने घण्टे कुली को काम करना होगा।
नौ घण्टे सूर्य्य के उदय और अस्त होने के बीच में

दर माहवारी या दिन दिन के मेहनताना का या ठुको काम का।

रोज का खाना छोड़ के १८ बरस के और उस का ऊपर के मर्दों को कम से कम नीचे लिखे हुये दर से मिलेगा॥

					रुपैया	आना	पाई
पहिले साल	१०	शिलिंग माहवारी,	बराबर		८	०	०
दूसरे साल	११	"	"	"	९	०	०
तीसरे साल	१२	"	"	"	१०	०	०
चौथे साल	१३	"	"	"	११	०	०
पांचवें साल	१४	"	"	"	१२	०	०

औरतों को आधा तलब मिलता है और नाबालिगों को हिसाब लगा के

दूसरी शर्तें अगर हों।

घर रहने को और बीमार होने से डाक्टर मुफ्त मिलेगा।
रोज का खाना बालिग को नीचे लिखे हिसाब से मिलेगा।
चावल रोज डेढ़ पौण्ड (४ ⅞ अलक) या हफ्ता में तीन दिन चावल के बदले २ पौण्ड (५ ½ अलक) बाजरे का आटा।

दाल	२ पौण्ड (५ ½ अलक)	माहवारी।
निमक	१ पौण्ड (२ ¾ ")	"
नोना मछली	२ पौण्ड (२६ ½ पोल)	"
घी या तेल	१ पौण्ड (१३ ¼ पोल)	"

१२ बरस से नीचे का कुली ऊपर लिखे हुये रोज के खाना का तीन पौन

शर्त नेटाल में रहने कि और किराया वापस आने का।

यह कुलि हिन्दुस्थान मे वापस आने का किराया मुफत पावेगा, योंकि नेटाल मे रहकर और इकरारनामाके मुताबिक कारकारिका काम करके पांच बरस पुरा करेगा। कोइ कुलि बिना एक लिखे हुये सनद के नेटाल नहि छोड़ सकेगा और कोइ कुलि को वैसा सनद नहि दिया जायेगा योंकि नेटाल मे रहकर पांच बरस नहि पुरा कर सका बगैर "इन्डियान इमिग्रेसन ट्रस्टबोर्ड" का लिखे हुये हुकुमके नहि जाने पावेगा।

इकरारनामाके सर्त पुरा होने के बाद यह कुलि इया हिन्दुस्थान मे लोट आवे इया फिर इकरारनामा देकर नेटाल मे रहे योंकि वखत्-ब-वखत् देना पड़ेगा, इरहाल हरेक वैसा नवा इकरारनामा मुद्दत दो बरस के वास्ते होवेगा और बसर्त कि वह इकरारनामाके नोकरिके वास्ते इह निरिख से माहाना मिलेगा कि पहला बरस (१६) सोला शिलिंग माहिनामें दुसरा बरस (१७) सतर शिलिंग माहिनामे तिसरा बरस (१८) आठारा शिलिंग माहिनामे चौथा बरस (१९) उनैस शिलिंग माहिनामे और पांचोया बरस और इसके ऊपर हरेक बरस के वास्ते २०) बिस शिलिंग करके माहिनामे तलब मिलेगा।

हरेक कुलि योंकि आपना पहला इकरारनामा इया इसका बाद और कोइ इकरारनामा योंकि आइन मुताबिक जारि होय पुरा करके हिन्दुस्थान मे लौटना चाहे तो "इन्डियान इमिग्रेसन ट्रस्टबोर्ड" उसको वापसि किराया मुफत देगा।

कोइ कुलि इस आइन के २ धाराके मुताबिक अगर इकरारनामा देवे तो उसको इजाजत मिलेगा मुवताद "प्रटेकटर अफ इमिग्रान्ट". के राजि से, आपना मुनिब पसन्द करने को जहा कि वह इकरारनामा देवेगा बाद उसका पहला इकरारनामाके नोकरि पुरा होने से और वैसा पसन्द करने को लिये एक माहिना के वास्ते वह कुलि को एक "पास" दिया जावेगा. और वैसा "पास" उसका आगे का मुनिब देगा. अगर वह मुनिब देनेको इनकार करे तो जिला—' माजिस्ट्रेट' के पास मिलेगा।

फिर इकरारनामा देनेका पुरा समय हरेक कुलि योंकि वैसा इकरार फिर देवेगा तो उसको वहि पुरा इजाजत मिलेगा येसा कि उसको पहला इकरारनामा के समय मिला था।

हरेक हिन्दुस्थान के कुलि योंकि इस आइनके २ धारा के मुताबिक इकरारनामा दिया है अगर कोइ हिन्दुस्थान मे लौट आनेको इनकार करें भुलजावे इया न चाहे इया फिर इकरारनामा देनेको इनकार करे तो बरस बरस एक सनद लेना होगा नेटाल मे रहने को योंकि जिलाके माजिष्ट्रेट के पास मिलेगा और हरेक वैसा सनद के वास्ते ३ तिन पौन्ड करके बरस मे देना पड़ेगा।

کب تک کام کرنا هوگا
پانچ برس

کیا کام کرنا هوگا
کاشتکاري

هفته میں کتنے دن قلي کو کام کرنا هوگا
هفته میں چهه روز اطوار اور چهٹي کے روزوں کو چهوڑ کے •

بلا اوپري مهنتانه کے دن میں کتنے گهنٹے قلي کو کام کرنا هوگا
نو گهنٹے آفتاب کی طلوع اور غروب هونیکے اندر میں •

در ماهواري یادن دنکے مهنتانه کا یا چکتي کام کا
روز کے کهانے کے علاوہ اٹهارہ برس کے اور اوسکي اوپر کی مردونکو کم سے کم نیچے لکهی هوے در سے ملےگا •

پائي	آنا	روپیه				
•	•	۸	شلنگ ماهواري برابر		۱۰	پهلے سال
•	•	۹	ایضا	ایضا	۱۱	دوسرے سال
•	•	۱۰	ایضا	ایضا	۱۲	تیسرے سال
•	•	۱۱	ایضا	ایضا	۱۳	چوتهي ایضا
•	•	۱۲	ایضا	ایضا	۱۴	پانچوین ایضا

عورتونکو نصف طلب ملتا هی اور نا بالغونکا حساب لگاکے

علاوہ شرطین اگر هون
گهر رهنی کو اور بیمار هونی سی ڈاکٹر مفت ملیگا •
روز کا کهانا بالغ کو نیچے لکهی حساب سی ملیگا •
چاول روز ڈیڑه پاونڈ (۴ ⅞ الک) یا هفته میں تین روز چاول کی بدلي ۲ پاونڈ (۵ ½ الک) باجرے کا آٹا •
دال ۲ پاونڈ (۵ ½ الک) ماهواري •
نمک ۱ پاونڈ (۲ ¾ ایضا) ایضا •
نونا مچهلي ۲ ایضا (۲۶ ½ پول) ایضا •
گهي یا تیل ۱ ایضا (۱۳ ¼ پول) ایضا •
۱۲ برس سی نیچی کا قلي اوپر لکهی هوے روز کی کهانا کا تین حصه پاویگا •

شرائط نیٹال میں رهنے اور وهانسے هندوستان واپس آنے کے لیئے

امیگرنٹ یعنے قلي نیٹال میں پانچ برس تک رهے اور کام کاشتکاري موافق قرار نامه کے کرنے سے هندوستان بلا محصول واپس آ سکتاهے - کوي امیگرنٹ یعنے قاي بغیر تحریري لاسینس کے نیٹال سے نهین آ سکتا هے امیگرنٹ قاي بغیر پانچ برس کي خدمت ختم کئے هوئے لوٹ آنے کی اجازت نهین ملیگي - تا وقتیکه ٹرسٹ بورڈ انڈین امیگریشن کا تحریر حکم واسطے واپس آنے هندوستان کے حاصل نه کیا هو * مدت خدمت ختم هونے یا کوي رد و بدل هونے اقرارنامه کے قلي هندوستان لوٹ آوے خواه نیٹال میں به پیروي نئے اقرارنامه کے جب تک جي چاهے رهے اور هر ایک نئے اقرار نامه کي مدت دو برس کي هوگي اور یهه بهي شرط هے که پهلے اقرار نامه کے میعاد گذرنے کے بعد پهر اقرارنامه لکهنےگا تو قلي کو تنخوه پهلے سال ۱۶ شلنگ ماهواري دوسرے سال ۱۷ شلنگ ماهواري تیسرے سال ۱۸ شلنگ ماهواري چوتهے سال ۱۹ شلنگ ماهواري اور پانچوین سال اور اوسکے بعد هر سال ۲۰ شلنگ ماهواري کے حساب سے ملیگا - هر ایک قلي باشنده هندوستان بعد ختم هونے پهلے اقرار نامه کے یا اوسکے بعد کے اقرار نامون کي موافق قانون اوس وقت کے بلا محصول هندوستان واپس آنیکے لئے انڈین امیگریشن ٹرسٹ بورڈ سے مستحق هوگا هر ایک قلي جو اس قانون کے سکشن (۲) کا پابند هوگا اوسکو پروٹکٹر آف امیگریشن کي مرضي کے مطابق اس بات کي آزادي رهیگي که وه اپني مالک جسکے نئے اقرار نامه سے بعد گذرنے میعاد پهلے اقرارنامه کي خدمت کرنا چاهے پسند کرے اور اوس پسند کیواسطے ایک مهینه کا پاس اپنے پهلے مالک سے لیوے اور اگر دینے سے انکار کرے تو ضلع کے مجسٹریٹ سے حاصل کرے - هر ایک قلي بعد ختم هونے پهلے اقرار نامه کے وهي حق دوسرے اقرار نامونمین قایم رهیگا جیسا که پهلے اقرارنامه میں تها - اگر کوي قلي جس نے اس قانون کے سکشن (۲) کے موافق اقرار نامه کیا هے هندوستان لوٹنا نه چاهے یا غفلت کرے یا بهول جاوے یا وهان رهکر دوسرا اقرار نامه نکرنا چاهے اوسکو کالوني میں رهنے کیواسطے هر سال ضلع کے مجسٹریٹ سے ایک لاسینس حاصل کرنا هوگا اور اسکے واسطے اوسکو ۳ پاؤنڈ روپیه سالانه دینا هوگا •

I agree to accept the person named on the face of this form as an Emigrant on the above conditions.

In my presence

Registering Officer. *Recruiter for Natal.*

Dat d at________________

C. BANKS, M. D.
Protector of Emigrants.

ROBERT W. S. MITCHELL, C. M. G.
Government Emigration Agent for Natal.

ब्रिटिश शासकों द्वारा भारतीय श्रमिकों के लिये जारी किए गए त्रिभाषी संविदा का मुखपृष्ठ, 1903
Cover page of the trilingual agreement issued by British authorities for Indian workers, 1903

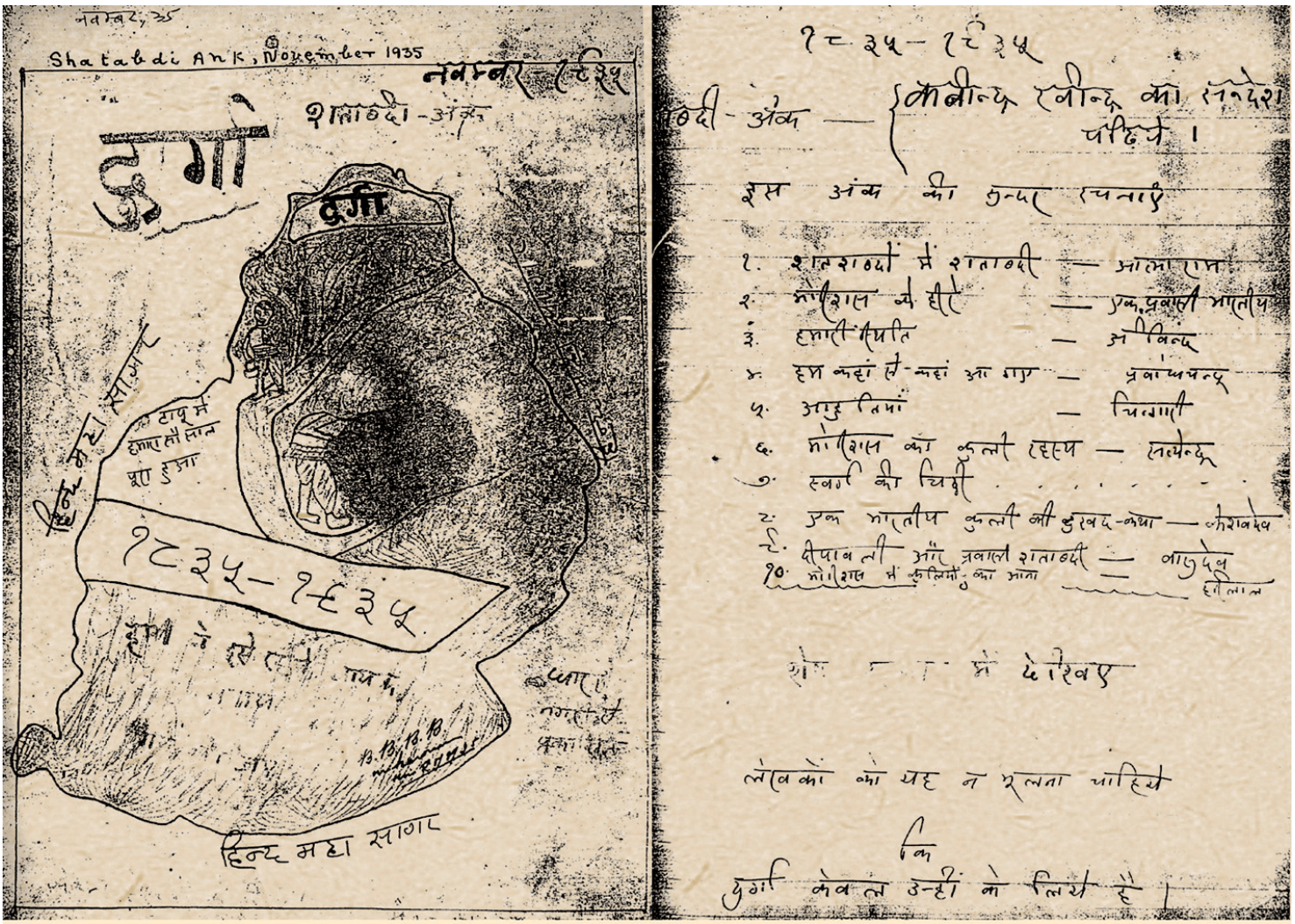

मारिशस में प्रवासियों द्वारा एक शताब्दी पूर्ण होने पर निकाली गई हस्तलिखित पत्रिका दुर्गा का मुखपृष्ठ एवं रचनाकारों की सूची, नवम्बर 1935

Cover page of 'Durga', a newsletter released on the occasion of the completion of centenary in Mauritius by the Indian immigrant population, November 1935.

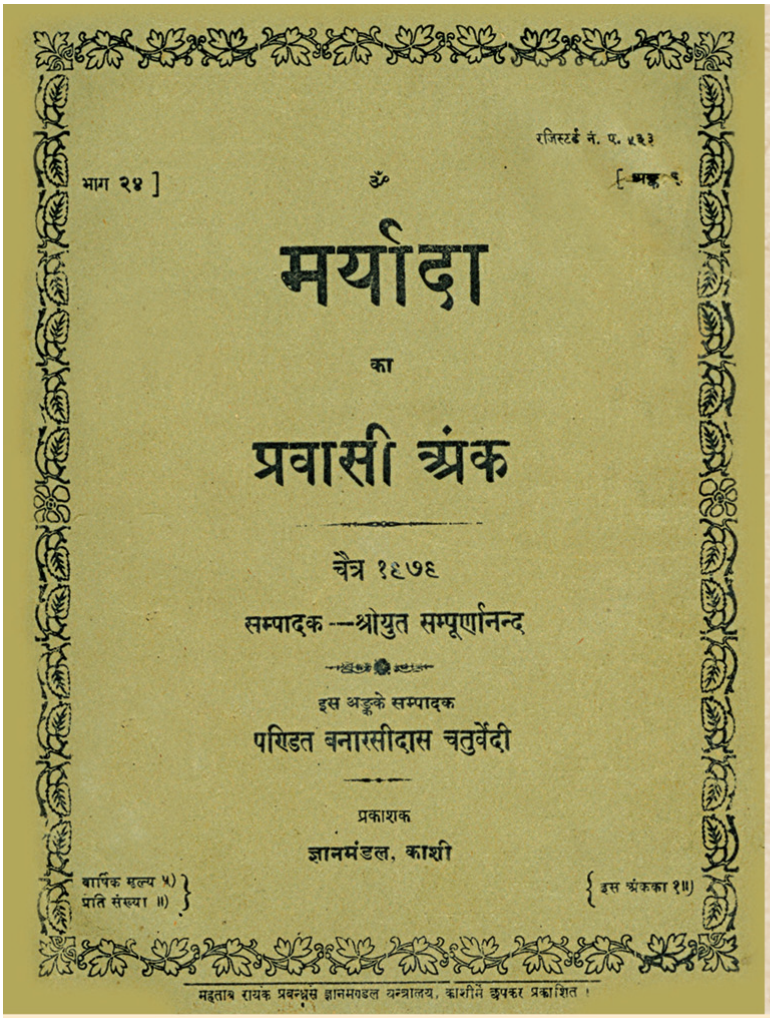

रजिस्टर्ड नं. ए. ५६३

भाग २४]

ॐ

[अङ्क ६

मर्यादा

का

प्रवासी अंक

चैत्र १९७९

सम्पादक—श्रीयुत सम्पूर्णानन्द

इस अङ्कके सम्पादक

पण्डित बनारसीदास चतुर्वेदी

प्रकाशक

ज्ञानमंडल, काशी

वार्षिक मूल्य ५)
प्रति संख्या ॥)

इस अंकका १॥)

महताब रायके प्रबन्धसे ज्ञानमण्डल यन्त्रालय, काशीमें छपकर प्रकाशित।

मर्यादा

मासिक-पत्रिका

अङ्क ६ } चैत्र १९७९ { भाग २५

हिन्दुस्तानी यात्री और हिन्दुस्तानी अड्डे।

परमात्माको सहस्र धन्यवाद कि आज भारतके लाल अनेक देशोंमें अनेक लीलाएँ रच रहे हैं और बहुत महत्वपूर्ण कर्तव्यपालन कर रहे हैं। ये कुली कहलानेवाले भारतीय भ्रातृगण ही जो आज कई एक टापुओं और द्वीपोंमें मार कूट और नाना प्रकारके दुःख झेल रहे हैं वास्तवमें एक विशाल हिन्दुस्तानी राज्यकी नींव डाल रहे हैं। आज वे चाहे कुली काले आदमी नेटिव बेगर–कहलावें पर कल वे ही उन बाग बगीचोंके स्वामी होंगे जहां उन्होंने जागृत क्लेशमें रातें काटी हैं। यह स्वाभाविक नियम है। यह ही तो है कर्मका फल और अटल ईश्वरका न्याय।

पर हम यह नहीं कहते कि कोई भारतीय जो भगवान् कृष्ण अथवा बुद्धदेवको अपना पूज्य जानता है या जो हजरत मुहम्मद वा ईसा मसीहको खुदाका पैगम्बर मानता है दो गज पृथ्वीके लिये लालचको उत्तेजित करेगा–नहीं वह तो सदा ही ईश्वरीय मर्यादा-का पालन करता है और सभीको ईश्वरीय मार्ग दिखाना चाहता है। और इन भारतवासियोंका तप अवश्य ही अन्तमें सफल होगा और वे गुमराह काफर जो दो दिनके सुखके लिये अपने ही मनुष्य भाइयोंपर अत्याचार करते हैं अवश्य ही पश्चात्ताप कर इन्हीं भाइयोंके साथ वास्तविक भाइयोंकी तरह रहना सीखेंगे। न कोई फिर कुली रहेगा और न मनमाना स्वामी।

—(४१४)—

पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी द्वारा सम्पादित 'मर्यादा' का प्रवासी अंक

Pravasi issue of 'Maryada' edited by Pandit Banarsidas Chaturvedi.

जनवरी
१९३०

विशाल-भारत

प्रवासी-अंक

वार्षिक ६)
इस अंकका १)

सम्पादक :— बनारसीदास चतुर्वेदी

सञ्चालक :— रामानन्द चट्टोपाध्याय

ट्रिनीडाड-प्रवासी भारतीय

— :०:——

[अन्य उपनिवेशोंके प्रवासी भाइयोंके साथ-साथ ट्रिनीडाडके प्रवासी भाइयोंको भी निमन्त्रण दिया गया था कि प्रवासी अङ्कके लिये कुछ लिख भेजें; पर खेद है कि उन्होंने कोई भी लेख नहीं भेजा। अतएव निम्न लिखित लेख दिसम्बरके इंडियन रिव्यूमें प्रकाशित मि० ऐण्डूजके Indian Conditon in Trinidad शीर्षक लेखके आधारपर लिखना पड़ा—सम्पादक]

ट्रिनीडाडमें प्रवासी भारतीयोंकी संख्या लगभग उतनी ही है जितनी ब्रिटिश-गायनामें। हिन्दुओं तथा मुसलमानोंका अनुपात भी वही है। यह बात निम्न-लिखित अङ्कोंसे प्रकट होती है।

प्रवासी भारतीयोंकी	ट्रिनीडाड	ब्रिटिश-गायना
पूर्णसंख्या	१२१,०००	१२५,०००
मुसलमान	१८,०००	१८,०००
ईसाई	१३,०००	१०,०००
मद्रासी	२,०००	४,०००

इनके सिवाय जमैकामें २००००, ग्रेनेडामें २०००, सेन्ट लूसियामें २०००, पनामा कैनल प्रदेशमें २००० और डच गायनामें ३४ हज़ार प्रवासी भारतीय रहते हैं। डच-गायना-प्रवासी भारतीय मुख्यतया हिन्दी भाषा-भाषी हैं और इनमें २ हज़ार मुसलमान हैं।

इस प्रकार सम्पूर्ण पश्चिमी द्वीप समूहमें लगभग ३ लाख भारतीय हैं। इनमें मोटे तौरपर ४० हज़ार मुसलमान, ३० हज़ार ईसाई और २३ हज़ार हिन्दू हैं।

ट्रिनीडाड-प्रवासी भारतीयोंकी संख्या (१२१,०००) वहांकी सम्पूर्ण जनसंख्याकी तिहाई है। ट्रिनीडाड एक छोटासा द्वीप है और उसकी समृद्धिके दो कारण हैं ; एक तो वहांकी ज़मीन उपजाऊ है, और दूसरे वहां बहुमूल्य खनिज पदार्थ पाये जाते हैं।

जब हम ट्रिनीडाडकी अन्य जातियोंके साथ भारतीयोंकी शिक्षा सम्पत्ति और पोज़ीशनका मुक़ाबला करते हैं, तो हम उन्हें औसत दर्जेसे कुछ ऊँचा ही पाते हैं; बल्कि यों कहना चाहिए कि शिक्षा-क्षेत्रमें तो वे अन्य जातियोंकी अपेक्षा कुछ आगे बढ़े हुए दीख पड़ते हैं, और उनकी यह बढ़ती दिनों दिन स्पष्ट होती जाती है : यह बात न भूलनी चाहिए कि ट्रिनीडाड प्रवासी भारतीय अथवा उनके पूर्वज हिन्दुस्तानसे शर्तबन्दीकी गुलामीमें लाये गये थे और इस गुलामीका पूर्ण अन्त सन् १९२२ में हुआ, जब कि शर्तबंधे मज़दूर अपनी शर्तबन्दीसे मुक्त हुए। यह देखते हुए ट्रिनीडाड-प्रवासी भारतीयोंकी उन्नति सचमुच आश्चर्य जनक है।

ब्रिटिश-गायना और डच-गायना प्रवासी भारतीयोंकी स्थिति देखनेके बाद मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि ट्रिनीडाडकी सरकारने प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षाके लिए अपने उपनिवेशकी जनताको पर्याप्त साधन प्रदान किये हैं। यहाँपर शिक्षकोंको जो वेतन मिलता है, वह भी ब्रिटिश-गायनाके शिक्षकोंकी अपेक्षा कहीं ज़्यादा है। शिक्षकोंको ट्रेनिंग देनेके लिए भी साधन और सुभीते हैं, इसलिए अच्छे शिक्षक मिल सकते और तय्यार किये जा सकते हैं। इस उन्नतिशील द्वीपमें प्रवासी भारतीयोंकी शिक्षाका प्रबन्ध काफ़ी अच्छा है, और वे भी उन साधनोंका, जो उनके लिए उपस्थित हैं, उचित उपयोग करते हैं। मैंने एक साधारण भारतीय विद्यार्थीके विषयमें सुना कि उसकी कालेजकी शिक्षाका सम्पूर्ण व्यय सरकारने अपने ऊपर ले लिया है। ट्रिनीडाड-प्रवासी भारतीयोंके नेताओंके लिए सचमुच यह बात बड़े गौरवकी है कि वे उपयुक्त अवसरोंसे लाभ उठा रहे हैं। निस्सन्देह भारतीयोंमें एक ऐसी बौद्धिक शक्ति है, जो अदम्य है—दबाई नहीं जा सकती और जो विकासका अवसर पाते ही बड़ी तेज़ीके साथ बढ़ने लगती है।

आज ट्रिनीडाडमें प्रवासी भारतीय प्रत्येक पेशेमें अच्छे पदोंपर विद्यमान हैं और सरकारी कौन्सिलोंमें भी ईमानदारीके साथ अपना कर्तव्य पालन कर रहे हैं। ऐसे धनवान आदमी भी उनमें पाये जाते हैं, जिन्होंने या तो ज़मींदारीसे अथवा व्यापारसे काफ़ी रुपया कमाया है। कुछ भारतीय ऐसे सौभाग्यशाली भी हैं, जिनकी ज़मीनमें तेलकी खानें निकलीं, और जिसके कारण वे काफ़ी धनवान बन गये।

ट्रिनीडाडके पुराने सरकारी कागज़ात देखते हुए एक बात मुझे बड़े मार्केकी मालूम हुई, वह यह कि शर्तबन्दी गुलामीके दुराचारों और पापोंसे छुटकारा पानेमें ट्रिनीडाड-प्रवासी भारतीय बहुत जल्दी सफल हुए। यद्यपि जैसे अन्य उपनिवेशोंको तीन औरतों पीछे दस आदमी भेजे गये थे, वैसे ही ट्रिनीडाडको भी भेजे गये थे और शर्तबन्दीकी तमाम बुराइयां ट्रिनीडाडमें भी रहीं, पर ट्रिनीडाड-प्रवासी भारतीय-समाजमें ये बुराइयां उतनी गहराई तक घर नहीं कर पाईं। उदाहरणार्थ पुरानी रिपोर्टोंमें आत्मघात और भयंकर आघातके जो अंक ट्रिनीडाड-प्रवासी भारतीय शर्तबंधे मज़दूरोंके विषयमें पाये जाते हैं, वे फिजी इत्यादि उपनिवेशोंके देखे बहुत कम हैं।

पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी द्वारा सम्पादित पत्रिका 'विशाल भारत' के प्रवासी अंक का आवरण पृष्ठ एवं ट्रिनिडाड में प्रवासी भारतीयों की स्थिति पर लेख, जनवरी 1930

Cover page of the Pravasi issue of 'Vishaal Bharat', edited by Pandit Banarsidas Chaturvedi, containing an article on Indians living in Trinidad, January 1930.

अमेरिकामें वेदान्ती

[लेखक :—अध्यापक सुधीन्द्र बोस, एम० ए०, पी-एच० डी०, आयोवा]

(विशेषकर 'विशाल-भारत' के लिए)

(१)

आधुनिक भारतवर्ष अकसर अपने राजनैतिक आन्दोलनके धूम-धड़क्केमें उन पवित्र आत्माओंको भूल जाता है, जो अमेरिकामें वेदोंकी रोशनी फैला रही हैं। जिस किसीके आधी आँख भी है, वह भलीभांति देख सकता है कि इस पवित्र काममें जुटे हुए व्यक्तिओंका सन्देश केवल अमेरिका ही के लिए कल्याणकारी नहीं है, बल्कि हिन्दुस्तानके लिए भी बहुत लाभदायक है। इन लोगोंने एक ओर तो अमेरिकाके सामने—जो ईसाई-मतके सैकड़ों सम्प्रदायोंमें बँटा हुआ है—एक विश्वव्यापी धर्मका आदर्श उपस्थित किया है, और दूसरी ओर इन्होंने नई दुनियाँ और हिन्दुस्तानके बीचमें सद्भाव और एक दूसरेके भावोंको समझनेका सम्बन्ध स्थापित करनेकी कोशिश की है। इन दोनों देशोंमें समुचित और नियमित सम्पर्क स्थापित करनेके अवसर बढ़ानेमें इन लोगोंकी सेवाएँ अनमोल हैं। कम-से-कम इन लोगोंने इन दोनों महान् राष्ट्रोंके बीचकी खाईको पूरनेका शानदार श्रीगणेश तो अवश्य ही किया है। जो लोग इन लोगोंकी सेवाओंको तुच्छ बतानेकी कोशिश करते हैं, वे लोग विचारशीलताके स्कूलमें 'क, ख, ग' से आगे नहीं बढ़ने पाये हैं।

जबसे सन् १८९३ में स्वामी विवेकानन्दने इस देशकी पहले-पहल यात्रा की थी, तबसे यहांके समझदार अमेरिकनोंमें वेदोंकी शिक्षाने एक आदरणीय स्थान ग्रहण कर लिया है। अमेरिकाकी सर्वप्रथम वेदान्त-सोसाइटीकी स्थापना स्वामी विवेकानन्दने न्यूयार्क नगरमें शिकागोकी 'विश्व-धर्म-परिषद्' के एक साल बाद सन् १८९४ में की थी। आजकल अमेरिकामें छै वेदान्त-केन्द्र हैं, जहाँ लगभग एक दर्जन स्वामी कार्य करते हैं। वे लोग सब रामकृष्ण-विवेकानन्द-संघके पदाधिकारी हैं। मानव-जातिके कल्याणके लिए इन निष्ठावान कार्यकर्ताओंके कामोंका विवरण (रिकर्ड) देखकर उन प्राचीन बौद्ध-भिक्षुओंकी याद आ जाती है, जिन्होंने भारतवर्षसे दूर-दूर देशोंमें जाकर भगवान् गौतम बुद्धके उपदेशोंका प्रचार किया था। उन लोगोंका कार्य व्यर्थ नहीं गया। उनका बीज जीवित है। ये स्वामीगण दूरदर्शी, सत्य-दृष्टा और कल्याणके स्वप्न देखनेवाले हैं।

जो बुद्धिमें भी परिपक्व हो चुके हैं, ऐसी धारणाओंसे मुँह फेरकर युक्तिपूर्ण बातें सुन सकते हैं।

बहुतसे अमेरिकनोंको, जिन्हें पादरियोंके रंगे हुए उपदेशोंमें मज़ा आता है, वेदान्तका बुद्धिमतापूर्ण प्रचार अच्छा नहीं लगता। जहाँ तक मुझे मालूम है स्वामी लोग वेदान्तको अपने यथार्थ पवित्र और ज्वलन्त रूपमें बनाये हुए हैं। वे लोग रोग अच्छा करने या जादू-टोना करनेके नीच ढोंगसे इसे दूषित नहीं करते। इसके अतिरिक्त, वे लोगोंके धर्मका परिवर्तन भी नहीं करते।

पोर्टलैंडके स्वामी प्रभावानन्दने मुझसे कहा—"वेदान्त अभी तक अमेरिकाके जनसाधारणके मनको अच्छा नहीं लगा है। यह बढ़ता धीरे-धीरे है, परन्तु पक्के ढंगसे। वेदान्तका विश्वकी एकताका आदर्श और धर्मका समुचित युक्तिपूर्ण अर्थ अमेरिकाके विचारशील पुरुषोंको भाता है। वेदान्तका कार्य वर्तमान कुधारणाओंको दूर करके बुद्धिमान अमेरिकनोंके हृदयमें भारतवर्षके प्रति प्रीति उत्पन्न कर रहा है।

(७)

सभी वेदान्तिक सोसाइटियाँ आर्थिक दृष्टिसे स्वावलम्बिनी हैं। मेम्बरोंकी फीस, इच्छासे दिया हुआ चन्दा और पुस्तकोंकी बिक्री उनके आयके साधन हैं। पोर्टलैंड और प्राविडेन्सको छोड़कर अन्य स्थानोंकी सोसाइटियोंके पास अपने स्थायी भवन हैं। आधुनिक ढंगकी खासी इमारतें हैं।

उन लोगोंके कथनानुसार, जो इसके सम्पर्कमें हैं, वेदान्त-प्रचारके कार्यका भविष्य बहुत उज्ज्वल है। वेदान्तिक सोसाइटियोंकी माँग शीघ्रतासे बढ़ रही है। वे लोग जिनका स्वामियोंका साथ होता है, भारत और उसकी फिलासफीके लिए बहुत सहानुभूति रखते हैं। यह बात न भूल जाना चाहिए कि स्वामियोंको बड़ी अड़चनोंका सामना करना पड़ता है। विदेशी रीति-रिवाज, विदेशी भाषा, ईसाई गिरजोंका विरोध और लोगोंकी पुस्तैनी जड़-प्रवृत्ति आदिको उन्हें अतिक्रम करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त जनसाधारण

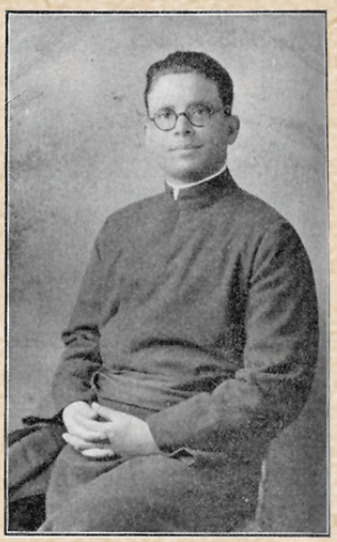

प्राविडेन्सके स्वामी अखिलानन्द

अमेरिकनोंकी रुचि मनोरंजन और भावुकताकी ओर अधिक है। जहाँ कहीं उन्हें यह चीज़ें मिलती हैं, वे सैकड़ोंकी संख्यामें जा उपस्थित होते हैं। स्वामी लोग सब तरहकी सनसनी-पूर्ण बातोंसे दूर रहते हैं, फिर भी उनके यहाँ श्रोताओंका जमाव अच्छा हो जाता है।

सैन-फ्रान्सिस्कोके स्वामी दयानन्दका कथन है—"कुछ सच्चे लोग ऐसे हैं, जो समस्त प्रतिकूल परिस्थितियोंके होते हुए भी हमारी सोसाइटीके साथ बने हैं। बहनेवाले बहुत हैं, वे कुछ समयके लिए सोसाइटीमें आते हैं और फिर बहकर शहरसे दूर हो रहते हैं, मगर फिर भी हमारे विचारोंसे सहस्रों आदमियोंको लाभ पहुँचा है। वेदान्तकी शिक्षाकी माँग दिनोंदिन बढ़ रही है। हमारे विद्यार्थी कहते हैं कि वेदान्त जीवनकी शान्ति है।

'विशाल भारत' के प्रवासी अंक में अध्यापक सुधीन्द्र बोस, आयोवा द्वारा प्रकाशित लेख 'अमेरिका में वेदान्ती' , जनवरी 1930

An article entitled 'America Mein Vedanti' by Sudhindra Bose, a teacher in Iowa, U.S., as it appeared in the overseas issue of 'Vishaal Bharat', January 1930.

प्रवासीकी प्रतीक्षामें

"विशाल-भारत"] [चित्रकर्त्री—श्रीमती प्रतिमा देवी]

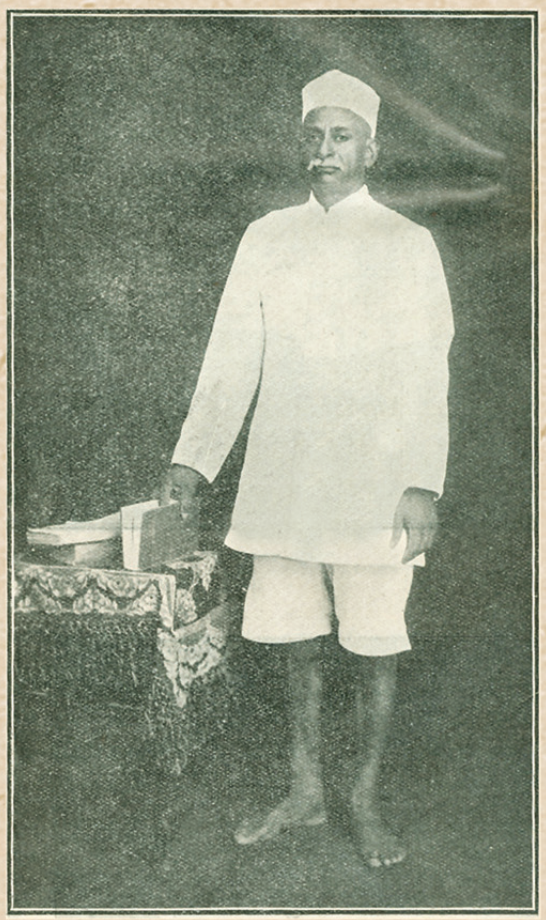

'फिजीमें मेरे इक्कीस वर्ष' के प्रणेता पं० तोताराम सनाढ्य

'विशाल भारत' के प्रवासी अंक में प्रकाशित चित्र – प्रवासी की प्रतीक्षा में व पं० तोताराम सनाढ्य, जनवरी 1930

A picture entitled 'Pravasi Ki Pratiksha' and Pandit Totaram Sanadaya published in the Pravasi issue of 'Vishaal Bharat', January 1930.

'चाँद' का प्रवासी अङ्क

Chand' Regd. No. A-1154

वर्ष ४, खण्ड १] जनवरी, १९२६ [संख्या ३, पूर्ण संख्या ३९

वार्षिक मूल्य ६॥) | इस अङ्क के सम्पादकः— | विदेश का मूल्य ८॥)
डाः माही ३॥) | पण्डित बनारसी दास चतुर्वेदी | इस अङ्क का मूल्य १॥)

प्रवासी अङ्क

Highly appreciated and recommended for use in Schools and Libraries by Directors of Public Instruction, Punjab, Central Provinces and Berar, United Provinces and Kashmir State etc. etc.

वर्ष ४ खण्ड १ | जनवरी, १९२६ | संख्या ३ पूर्ण संख्या ३९

महात्मा जी का सन्देश

["चाँद" के लिए]

प्रवासी भारतवासियों के लिए सब से अच्छा काम हम यह कर सकते हैं कि स्वराज्य लें और स्वराज्य पाने का अत्युत्तम और सरल मार्ग चरखा है। इसलिये यदि प्रवासी भाइयों को हम सहायता देना चाहते हैं तो चरखा चलाएँ और खद्दर पहिनें।

मा० कृ० २३

—मोहनदास गाँधी

पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी द्वारा सम्पादित पत्रिका 'चांद' के प्रवासी अंक का आवरण पृष्ठ और प्रथम पृष्ठ, जनवरी 1926

Inner cover and first page of the Pravasi issue of 'Chand', a newsletter edited by Pandit Banarsidas Chaturvedi, January 1926.

सावधान रहने की समस्या

[ले० श्रीयुत एच० एस० यल० पोलक—अवैतनिक मन्त्री प्रवासी-भारतवासी-समिति लण्डन]

ऐसा अवसर भारतवासियों के लिये कभी नहीं प्राप्त हो सकता है, जब वे अपने सुदूर, समुद्र पार रहने वाले प्रवासी भाइओं के सम्बन्ध में निःशंक एवँ निश्चिन्त हो जाँय। इसी प्रकार ऐसा भी समय आना एक बार ही असम्भव है, जब गोरे क्षेत्रस्वामी, अधिवासी, बड़ी बड़ी प्रभावशालिनी व्यापारिक संस्थाओं के अंशभागी, एवँ ऐसे स्वार्थी जन, जो साम्राज्यान्तर्गत गर्म और अर्ध-गर्म देशों की द्रव्य-सामग्रियों को बढ़ा कर एवँ लूट कर अपनी स्वार्थ-सिद्धि करते हैं, सस्ते, योग्य, ईमान्दार मज़दूरों की निरन्तर प्राप्ति के प्रयत्न से एक बार ही विरत हो जाँय; क्योंकि इन मज़दूरों की प्राप्ति ही एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा वे उन द्रव्य-सामग्रियों को धन के स्वरूप में अर्थात् मुनाफ़ा, लाभांश (dividend) एवँ सूद के रूप में परिवर्तित कर सकते हैं। और न कभी ऐसा ही अवसर उपस्थित हो सकता है, जब उन देशों में, एक प्रबल जाति के राजनीतिक प्रभुत्व के आधीन हो, जातिगत स्वार्थों का विरोध उपस्थित हो सके और पराधीन जाति अपने सामाजिक, आर्थिक एवँ राजनीतिक भविष्य की ओर निश्चिन्त हो सके।

इन सिद्धान्तों के उदाहरणों को ढूँढ़ने के लिये बहुत दूर जाने की आवश्यकता नहीं है। दक्षिण अफ्रिका की ओर ही ध्यान दीजिये। गत महायुद्ध के बाद से वहाँ पर एशिया-वासियों के विरुद्ध दुराग्रह-पूर्वक क़ानून बनाये जाते हैं और उन पर अत्याचार पूर्वक शासन किया जाता है। दक्षिण अफ्रिका में रहने वाली भारत-सन्तान को, जिनमें से दो तिहाई तो उसी भूमि पर उत्पन्न हुवे हैं, उपयुक्त रीति से अपने जीवन का निर्वाह करना तक कठिन हो गया है और उनका अस्तित्व तक संदिग्ध अवस्था में है!

कीनिया की ओर दृष्टिपात करने से भी ऊपर के सिद्धान्तों की परिपुष्टि होती है। भारत-वासियों का पूर्वीय अफ्रिका से शताब्दियों पहिले का इतिहास-प्रसिद्ध सम्बन्ध है और अफ्रिका की तटभूमि पर गोरे अधिवासियों के पदार्पण करने से बहुत पहिले ही वे वहाँ बस चुके थे। पर अब उन्हीं प्राचीन भारतीय अधिवासियों के स्वार्थों का इन नये आये हुवे गोरे लोगों के स्वार्थों की सिद्धि के लिये बलिदान किया जा रहा है! क्योंकि यह गोरे लोग उस देश की सन्तान हैं, जिनका वहाँ पर राजनीतिक प्रभुत्व है और वे अपने आपको अफ्रिका के मूल निवासियों के स्वतःनिर्वाचित अभिभावक के पद पर प्रतिष्ठित करके, स्वयँ विशेष अधिकारों के अधिकारी होने का दावा करते हैं!

फ़िजी की भी ठीक यही दशा है। यद्यपि वहाँ पर भारतवासियों की अनिवार्य्य रूप से आवश्यकता है, तथापि गोरे अधिवासी, जिन्हें वहाँ के शासनाधिकार प्राप्त हैं, उनके प्रति अत्यन्त दुर्भाव रखते हैं और बड़ी सरलता पूर्वक 'गोरी आष्ट्रेलिया' और 'गोरे न्यूज़ीलैण्ड' की सेना की सहायता से काम छोड़ देने वाले भारतीय मज़दूरों के निरीह निःशस्त्र समूह को कठोरता पूर्वक दमन करते हैं!

करुण-कथा

[लेखक—पं० चन्द्रनाथ जी मालवीय "वारीश"]

[१]

इन प्रवासी-भाइयों की दुख-कथा,
आज हम से है सुनी जाती नहीं।
दीन दुखियों का करुण-क्रन्दन भला,
दीन-दुखियों से सुना जाता कहीं?

[२]

वे बसे जाकर सुदूर-विदेश में,
छोड़ कर धन-धाम को, निज देश को।
हाय! उस पर कष्ट-कर घटना घटे,
किस तरह, कैसे सहें, वे क्लेश को?

[३]

क्या कहें? कहते यहाँ बनता नहीं,
दीन ही को पीसता संसार है!
दीन को ही दण्ड देते सब यहाँ,
दीन ही मानों हुआ भुवि-भार है?

[४]

हाय! जग में दीन का साथी नहीं,
हीन-जन असहाय फिर कैसे रहें।
मान को, सम्मान को तज कर भला,
पापियों के वार को कैसे सहें?

[५]

मानवों का मान रक्षण धर्म्म है,
प्राण रखना मान को खोकर नहीं।
विश्व में जीना पड़े यदि मान तज,
विज्ञ कहते—"प्राण को तज दे वहीं"॥

[६]

हा! प्रवासी-भाइयों के कष्ट का,
हम कहो? कैसे भला अनुभव करें।
वे विचारे यन्त्रणायें भोगते,
शोक! फिर हम क्यों न जीते जी मरें?

* यह लेख आपके अङ्गरेज़ी लेख का अनुवाद है। अङ्गरेज़ी का लेख अप्रपत्र प्रकाशित हो रहा है

पत्रिका 'चांद' के प्रवासी अंक में एच एस यल पोलक द्वारा प्रकाशित लेख व कविता, जनवरी 1926

An article and poem authored by S.L. Pollock in the Pravasi issue of 'Chand', January 1926.

इंडिअन ओपिनिअन

बुधवार, ता. ७ जानेवारी १९१४

अमर हरबतसींग

हरबतसींग गीरमीटीया का हाल कौन पूछेगा. कइ गीर मीटीये चले गये और कइ चले जावेंगे. लेकीन हरबतसींग जी, आप तो अपना नाम अमर कर गये हो. आप तो अप ना गीरमीट उत्तर अवस्था में हिंद देवी की लीखा दी. आप सीत्तेर ७० वर्ष का उमर में सत्याग्रही बने. इस लीये आप का नाम सारी दक्षिण अफ्रीका में प्रसिद्ध हो चूका हैं और मातृभूमी में प्रसिद्ध हो जायगा. यह सत्याग्रहकी महीमा है. जे सूर्य नारायण तपता है, सब चीजों को उज्वल करता है वैसे ही सत्यरुपी सूर्य नारायण सब सत्कार्यों को उज्वल कर देता है. यह कठोन कलीकाल में यद किंचित् सत्य का सेवन सेवक को अमर—उज्वल—कर देता है. हरबतसींगजी आपकी सत्य के सेवक थे. आपने हिंदी की सेवा की, आप ने यँह देशकी जहेलों को पवित्र कर दी. धन्य है आप को आप को सहस्त्रसः धन्य है हिंद माता जीसने आपको पैदा कीये. हमारे हिंदी भाइ अगर हरबतसींगजी की नकल कर यह लडत मे दाखल होवे ऐसी हमरी परमात्मा प्रत्ये प्रार्थना है.

लडतका समाचार

हमारे हिन्दी और टामिल पाठकों हमे क्षमा कोंगे जो हम केवल यह पृष्ट इसी महान उद्योग का समाचार विषय उप योग करे.

नेइनल कोंग्रस, हिन्दुस्तान का जातिय महा सभा गत २६ ता: के महाधिवेशन मे कई स्तावे प्रसार कर हम लोगोंका दावा का समर्थन किया है. विशेष कर यह हिन्दीओं की याचना कि, हिन्दीओं के पक्ष का प्रतिनिधीभी यहां का इन डीअन कमीशन (हिंदीओ पर कष्टों का न्याय करने का एक नइ अदालत) मे नीयुक्तो हों. जातिय महा सभा का सभा पती नवाब सैयद महमद मि. गांधी को यहां केवल (तार) द्वारा संक्षेपमें प्रस्तावोका विवर्शा भेजा है.

अंग्रेजी, टामिल और हिन्दी भाषा मे विज्ञापने छपा वितीर्शा कर दिया गया है. हिन्दीओं को सुचना दे प्रगट कर दिया गया है कि इस बीच सरकार से निवटेरा होने के लिय लिखा पढी चल रही है. इस कारण ता: १ जनवरी का कुच करने का इरादा अनियमित समय के लिये टाल दिया गया है, यह महिना का अन्त होने पहले हमको वीदित होवेगा कि हम लोंग का प्रार्थना स्वीकार होने की आशा है या नही. जैसा शिघ्र परिणाम वीदित होगा तुरन्त सर्व साधारण को सुचना दे दिया जायेगा.

इस बीच सब हिन्दीओं जो प्रीटोरिया के लिये कुच करने को सामिल होना चाहते हैं सो तैयार रहना चाहीये यह महान यत्न जातिय मर्याद के लिये है और यह धार्मिक उद योग है, क्यो कि हम लोग स्वतंत्रता पुनः प्राप्ति के लिय उद्योग करते और मनुष्यत से रहने चाहते है हिन्दी भाइयों को इस उद्योग मे जो रक्तश्राव हुआ इससे हिन्दी काम का प्रतिष्ठा सारे संसार मे बढ गया है. इस लडत मे हम सब केवल इश्वर से डरे. और सत्यता से अपनी अभिष्ट को प्राप्ति करें.

वह ३ पौन्ड का टेक्स जो गरीब हिन्दीओं को नीचे दबाये डालता है अवश्य छुट जाना और छुटेगा ही चाहे क्याही लागत लगे, पर जो हिन्दी जो इस उद्योग मे भाग ले कर कुच मे शामिल हो और पकडवा, कैद, यातना या मृत्यु सहन करे तिस से वह घृणित टेक्स छुटवाने सिवाय अपनी मान मर्यादा प्राप्त करेंगे, वे याद रखें कि, सुकुवार पुरुष और स्त्रीयां जिन्हे टेक्स नही देना पडता वे गोद मे बालक साथ लिये कैद भोग रहे हैं.

सर बेन्जामिन रोबर्टसन चीफ कमिशनर मध्य प्रदेश हिन्दु स्थान का दयालु गोरा, हिन्दुस्थान का वाइसरोय (लाट साहेब) द्वारा यहां भेजे गये है जिससे यहां हिन्दीओं के कष्ट का सवाल को समुझाने मे सहायक हो और जब तक वे भी हमे सुचना दें कि वे भी हमारे लिये हमारी दावा या मांग को नही प्राप्त कर सकते तब हम कुच करने को रोकते है, पर इतना तो निश्चय है कि, क्याभी हो या कोइ बीच बचाव हो, जो हमारी प्रार्थना नही स्वीकार होगी तो हम सब अपने चपल से बन्धाय हैं कि लडत पुनारंभ करेंगे.

मे. एंन्डरुस और पीयरसन दो अंग्रज हिन्दी कौम का प्रसिध्ध मित्र है वे अपनी इच्छा से सच्ची स्थीती जानने के लिय अभी यहां आयेहै. कइ वर्ष हिन्दुस्थान मे रहकर हिन्दीओं के लिय मित्रतुल्य काम कियेहै जिनका अतिही प्रशंसा मि. गोखले ने की है. ।ट पर उतरते समय मुख्य हिन्दीओं ने उन से मिले और मि. इस्मायल मुसा के मकानपर, जो मि. गोखले को यहां रहने समय सौंप दियेथे, उनको आदरकरने वे सत्कार भोज्य दियेहै.

डर्बन के कैदखाना मे सत्याग्रही कैदियों को क्लेश के विषय मे मि. गांधी से एक समाचार लेखक को य हवाल कहने मे दैनिक पत्रो मे उलेख होने से हल चल हुआहै, कैदियो ऐसा कहते है कि, कैदियों के वारडरो निशंक बिना रोक मार बैठते है, अन्न अधपका, दुषित और मैले बर्तनो मे मिलताहै और मैले कपडे कैदियों को पहनने को दिया गयाहै, उनके फर्यादों का अवज्ञा हुआहै और बहुत तरह का कुव्योहार उनपर हु है.

मि. यदरी, पदमसिंह, भवानी और तकु ता. २९ को कैद से छुटेहै यदरी और पदमसिंह देखने मे बहुत घट गयेहै वे कहते है कि बहुत से सत्याग्रही कैद मे आंवरोग मे पीडीता है पर यह कष्ट होने पर भी वे प्रसन्तासे है.

डर्बन के कैदखाना मे हाल समय लगभग २०० सत्याग्रही कदी है जिनमे लगभग २० स्त्रीयां है.

सत्याग्रहीयों जो प्रकट मे निर्वाह किये जारहे है वे स्थानान्तर भेजदियेगये ह. मि. रुस्तमजी के जमीन पर न्यु जरमनी मे जिसको इमाम शेख अबदुल कादर पवाजीर लीस मे लेकर सत्याग्रही यों के अधिकार मे सौंप दियाहै।

वृद्धि

"तत्वमस्ति" सामवेद

निज गौरव निज देश का जिसे न है अभिमान।
वह नर मानुष योनि में जन्मे वृथा जहान॥

VRIDDHI

A monthly Hindi - English News Magazine.
Annual Subscription 3s.

Apply:-
The Manager Vriddhi
P. B. 235 Suva, Fiji.

Editor .. ..Dr. I. H. BEATTIE, M.A.
Sub-Editor .. .. .. PANDIT DURGA PRASAD

Vol. 1 AUGUST, 1927 No. 1

CONTENTS

Our Aim
Our Motto
A Poem
News and Notes

फीजी प्रवासी भारतियों के वृद्धि के लिये मासिक समाचार पत्र।

मूल्य साल भर के लिये ३ शि०

पता: मेनेजर वृद्धि
पोष्ट बक्स २३५ सूवा फीजी

सम्पादक डाकटर आई. ऐच. बीटी एम.ए.
उप सम्पादक पं० दुर्गा प्रशाद

भाग १ सूवा फीजी अगस्त १९२७ अङ्क १

विषय सूची

हम वृद्धि चाहते हैं
फीजी सरकारी सभा में भारतीय
कुछ सोचने कि बात नहीं
समाचार और काव्य

वृद्धि

भाग १ सूवा फीजी अगस्त १९२७ अङ्क १

हम वृद्धि चाहते हैं।

जैसे महाजन अपने पैसे कि वृद्धि चाहता है और समाज के सुधारक अपने समाज कि वृद्धि चाहते हैं और वैयाकरणी स्वर कि वृद्धि चाहते हैं तैसे हम भी फीजी प्रवासी भारतियों कि वृद्धि चाहते हैं। इस कारण से हमारा नाम वृद्धि है।

१५ मई सन १८७८ इसवी को पहिला जहाज कुली प्रथा के जंजीर में जकडे हुऐ भारतियों को लेकर फीजी पहुचा था। इन ४७ साल में भारतीय लोग अपनी उन्नती बहुत कुछ कर चुके हैं।

आजकल फीजी टापू कि उन्नति के लिये कठिन परिश्रम कर हिन्दुस्तानी लोग उचित धन कमाते हैं पर वे गिरमिट के दिनों में ज्यादातर काम कर बहुत थोडा धन कमाते थे वह ऐसा हो सकता है कि गिरमिट के दिनों में भारतीय लोग अपने गाढे कमाई का धन फीजी टापू की उन्नति के लिये कर्ज में देदिये थे हम उसी पुराने कर्ज को ब्याज समेत भारतियों को दिलाना चाहते हैं।

गुण व्याकरण का एक शब्द है जिसके द्वारा स्वर बढाया जाता है जो सारे संसार के भाषाओं में है पर एक और शब्द है जिसके द्वारा स्वर दो बारा बढाया जाता है जिसे वृद्धि कहते यह केवल भारतवर्ष के ही भाषाओं में पाया जाता है।

फीजी प्रवासी भारतीय अपनी उन्नती बहुत कुछ कर चुके हैं जिससे अब गुण शब्द का अर्थ पूरा हो चुका और अब वृद्धि आने वाली है इस लिये हमारा अभिप्राय यह है कि वृद्धि आने तक हम भारतियों को हर तरह से मदद करेंगे कि उनमें वृद्धि जल्द आवे।

वृद्धि के विषय में हम बहुत कुछ नहीं जानते हैं और न हम उसके विषय में लिखही सकते हैं कि किस २ तरह की वृद्धि फीजी के भारतियों में होगी पर हम उसके विषय में जानना चाहते हैं। यदि आप किसी तरह कि वृद्धि भारतियों को दिलाना चाहें तो कृपाकर उसे हमारे पास लिख भेजिये। वृद्धि आने से पहिले हमें बहुत कुछ तैय्यारियां करनी है इन तैय्यारियों पर लिखा हुआ लेख हम धन्यवाद सहित ग्रहण करेंगे।

भारतियों कि वृद्धि कैसे होगी इस विषय पर यदि कोई भारतीय सज्जन हिन्दु इसाई या मुसलमान भाई लेख लिखें तो हम उसे धन्यवाद सहित ग्रहण कर छापेंगे पर यदि कोई ऐसा लेख लिखे जिससे भारतियों कि वृद्धि में बाधा हो तो कृपाकर ऐसा मत लिखें यदि लिखे भी तो अपने घर में रखें क्योंकि हम उस गुरु के चेला हैं जिनका कहना है न गाली खाओ न गाली देवो न गाली सुनो।

फीजी से निकलने वाली हिंदी पत्रिका 'वृद्धि' का प्रथमांक, अगस्त 1927
First issue of 'Vriddhi' a Hindi newsletter published from Fiji, August 1927.

DEPARTMENT OF ENLIGHTENMENT & CULTURE

D.M.B.—I.I.L.

INDIAN NATIONAL ARMY— IS KI BUNIYAD AUR AGHAZ

Hamara Maqsad: Takhat ya takhta.

Hamara sila: Hindustan ke liye Purna swaraj.

Hamara Jangi Na'ara: Chalo Delhi! Chalo Delhi!

H.Q., S.C., Army Press Section.
2nd Impression 600 copies.

Syonan, April 2604.

Indian National Army—Is Ki Buniyad Aur Aghaz.

Iska Khiyal Pahle Mahatma Ghandi Ke Dilmen Paida Hua.

Indian National Army ki buniyad dalne ka sehra Mahatma Gandhi ji ke hi sar hai, kyonkeh Hindustan ke bachao ke liye ek National Army ke wajud men ane ka khiyal unhon ne duniya ko pahle hi batla diya tha. Jab 13 Feb., 1931 ko Robert Bernays mashhur Angrez yatri (Saiyah) aur mussannif (Kitab likhne wala) Mahatma ji se mila to unhon ne us par yeh khiyal zahir karte huye kaha keh agar us fauj ki sikhlai ke liye Angrez inkar karenge to hamen Japan, German, French ya kisi dusri taqatwar hukumat ki madad leni paregi." Chahe kuchh bhi ho is men shak nahin keh hamare lidar Mahatma ji, aur dusre bare bare lidaron ke dilon men Hindustan ko bideshi mulkon ke hamlon aur lut mar se bachane ke liye, ek qaumi fauj khari karne ka khiyal 10 sal se laga hua tha. Itna hi nahin balkeh Mahatma ji ne to apna yeh bhi shak saf kar diya tha keh aya Angrez kabhi Indian National Army ka khara hona Hindustan ki hifazat ke liye achchha samajhenge. Hindustan ki aj kal ki fauj aj har tarah se hathiyar-band ho kar taiyar hai.. Lekin yeh Hindustan ka bachao karne ke liye hai. Yeh Hindustan men Bartanwi Shahinshahat ko qaim rakhne ke liye nahin hai. Yeh Bartaniya ki us saltanat ki hifazat karne ke liye nahin hai, jis ke duniya ke har hisse men hosh gum ho chuke hain. Jab se Angrezon ne sar zamin Hindustan par qadam rakha hai, unka kabhi bhi yeh irada nahin hua keh woh ek Hindustan ki qaumi fauj, Bharti afsaron aur Bharti naujawanon ki fauj ko dekhen.

इंडियन नेशनल आर्मी का स्योनम से प्रकाशित पैम्फ्लेट

Pamphlet of the Indian National Army, published by Syonam.

CHALO-DEHLI

SHANGHAI, CHINA

AZAD HIND — ZINDABAD

Vol. I
No. 2

Mazhub nahin sikhata apes main bair rakhna
Hindi hain ham watan hain Hindostan hamara

September
1944

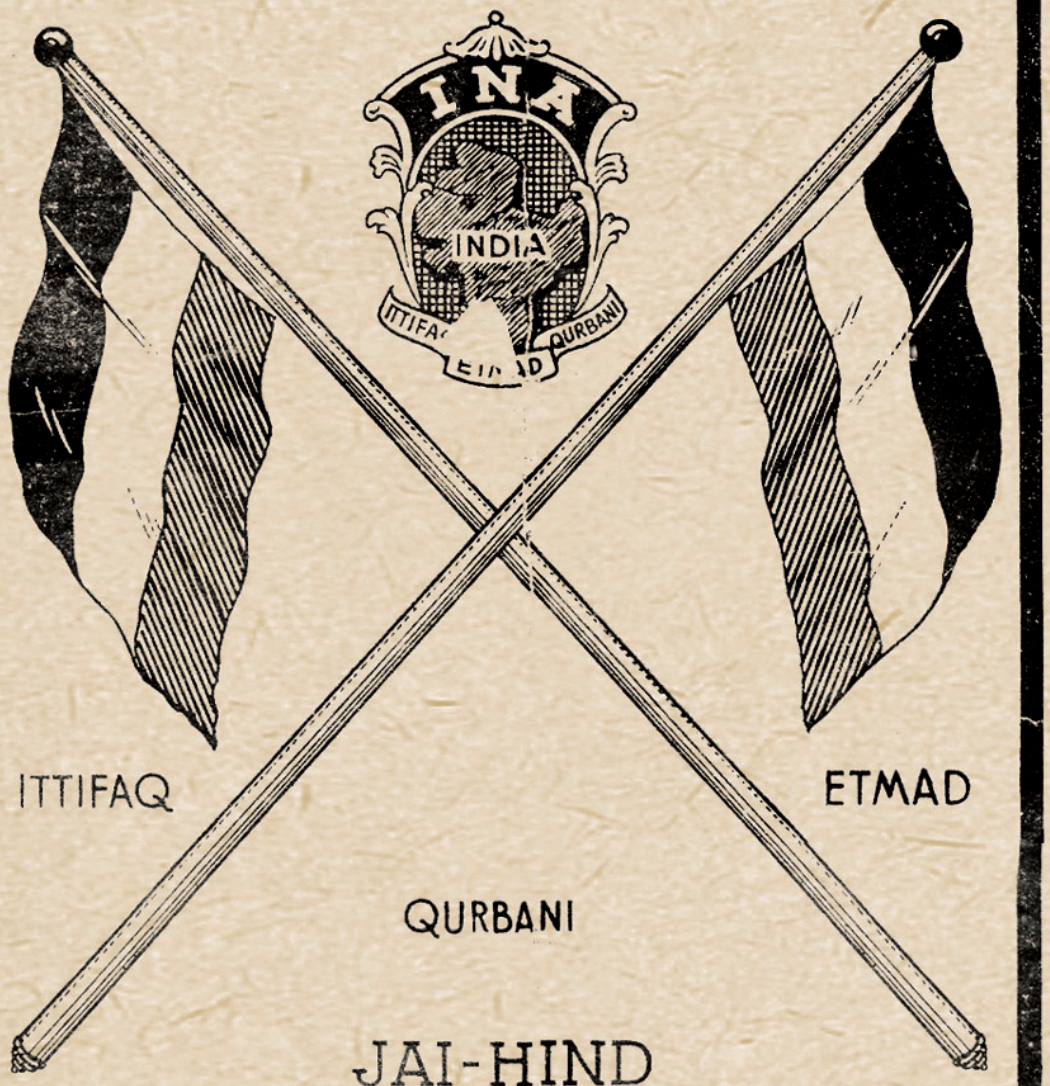

शंघाई से प्रकाशित इंडियन नेशनल आर्मी की पत्रिका 'चलो दिल्ली', सितम्बर 1944

'Chalo Dilli', a pamphlet brought out by the Indian National Army from Shanghai, September 1944.

(ESTABLISHED 1923)

फीजी समाचार

THE WEEKLY ORGAN OF THE FIJI INDIANS

SUBSCRIPTION 10/- PER ANNUM LOCAL POSTAGE PAID

Vol. 42 Thursday, December 19, 1968. Price 3d No. 51

कल आज से भिन्न रहेगा

किसी एक जाति की प्रगति को रोका नहीं जा सकता !!

विरोधी दल का सहयोग सरकार को देने का आश्वासन दिया गया मि० ऐ. डी. पटेल द्वारा सोमवार ६ दिसम्बर को जब बजट अधिवेशन फिर से आरम्भ हुआ। मि० पटेल ने सामालोचना की: अगर सरकार सोचती है कि हम विश्वास किए जाने के काबिल नहीं है तथा नहीं चाहती है कि तौके की प्रगति में अपना हांथ बटायें तो फिलहाल के लिए इसकी कोई प्रवाह नहीं: कल आज से भिन्न रहेगा; आप अनिश्चित समय तक एक जाति की प्रगति को रोक नहीं सकते।

मि. पटेल ने कहा कि तौंके तीन मालिकों की सेवा कर रहे हैं - फीजी सरकार, फीजीयन एडमिनिस्ट्रेशन तथा चीफों की परम्परागत हुकूमत। इस ने उन्हें आर्थिक जीवन की मुख्य दरिया से बाहर रखा है लेकिन अब वे आर्थिक तथा व्यापारिक जीवन का अपना हिस्सा चाहते हैं। इसे दर्शाया गया है फीजीयन चेम्बर आफ कोमेर्स के उनके समर्थन में, जो ५०,००० मेम्बरों के होने का दावा करता है।

आप ने फरमाया कि फीजीयन डेवेलोप्मेन्ट बोर्ड गत् सर लाला सुकूना की मृत्यु के बाद तौंके को आर्थिक मदद देने से चूक गया है।

मि. पटेल ने कहा कि फीजी में दो ख्यालातों वाले तौंकी हैं - एक पुराने तथा दूसरे प्रगतिशील।

आप ने दलील की कि दोनों विदेशी पूंजी तथा स्थानीय पूंजी पर संयम लाना होगा तथा लगाम लगाना होगा फीजी की जनता की रक्षा अन्यायपूर्ण लाभ उठाए जाने से करने के लिए।

आप ने समालोचना की: हम वैसी पूंजी का स्वागत करते हैं जो फीजी आना चाहती है देने - लेने की भावना के साथ जहां दोनों पक्ष को लाभ पंहुचेगा।

मि. पटेल ने कुछ कट्टर अंग्रेजों का हवाला दिया तथा समालोचना की: हम उन्हें साहब से भाई बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं।

आप ने दलील की कि राजनैतिक स्थिरता का यह मतलब नहीं है कि राजनैतिक परिवर्तन नहीं होना चाहिए। राजनैतिक स्थिरता वाला एक देश वह देश है जहां अमन चैन है, जहां व्यक्ति तथा सम्पत्ति की सुरक्षा है तथा जहां अच्छा शासन है।

उन्होंने इस बात को भूठा बताया कि वे तथा उन के दो साथी जिम्मेदार रहे १९६० में गन्ने के किसानों की एक हड़ताल को तोड़ने के लिए तथा कहा कि जिम्मेदार लोग वे दो आदमी जो अभी सरकार के मिनिस्टर हैं, तथा एक तीसरा व्यक्ति जो अभी शुगर बोर्ड के साथ हैं।

मि. पटेल ने इस बात को भूठा ठहराया कि उनकी पार्टी ने केरोसीन तथा चीनी पर अतिरिक्त टेक्स लगाने की सिफारिश की थी।

आप ने दलील की कि सरकार अपने प्राकृतिक साधनों का पर्याप्त उपयोग नहीं कर रही है। उन्होंने कहा कि हिन्दुस्तानी कृषि विभाग के कोलोनीविया में होने वाले परीक्षणों से ज्यादा अच्छा धान पैदा कर सकते हैं।

हंसी के बीच मि. पटेल ने कहा कि कृषि विभाग उपयुक्त किस्म के धान को नहीं चुनता है फीजी के लिए तथा नाना मारा एक रासबर और बाड़ी वाले एक घोड़े के बीच क्या फर्क है वे नहीं जानते।

डेवेलोप्मेन्ट प्लेन में मिडल स्कूलों तथा सेकेन्डरी टेक्नीकल स्कूलों के लिए आर्थिक व्यवस्था को न करने के लिए मि. पटेल ने आपत्ति प्रकट की तथा कहा कि फीजी के युवा नागरिकों के विरुद्ध यह एक अपराध है।

मिलाप से रहने में समर्थ हुए हैं। फीजी में भी वे वैसा कर सकते हैं।

बहस का उत्तर देते हुए मिनिस्टर फोर फायनेंन्स, मि. एच. पी. रिच्ची ने इस बात को भूठा बताया कि क्योंकि फीजी एक उपनिवेश है तो कोमनवेल्थ ऑफिस उसे आदेश देता है धन के प्रश्न पर। फीजी को वैसे कोई भी आदेश नहीं मिले हैं लगभग १९५० से।

विरोधी दल द्वारा लगाए गए आरोपों को अस्वीकार करते हुए कि कस्टम्स ड्यूटीस गरीबों पर बहुत ज्यादा लद रही है आप ने दर्शाया कि सरकार अति आवश्यक भोजन जैसे आटे, चीनी, मछली, चाय, दाल, चावल, मसाला, मटर, जव, मकई, भूसी ताजे तथा सूखे फलों को बिना ड्यूटी के आने देती हैं। केरोसीन के दाम चार पेनी प्रति गेलन से घटा कर दो पेनी प्रति गेलन कर दिया गया हैं।

टेक्स के सम्बन्ध में एक जांच कमीशन के लिए विरोधी दल की मांग का हवाला देते हुए आप ने कहा कि सरकार ने इस में कदम उठा रही है तथा ब्रिटेन से आग्रह किया गया एक टेक्स विशेषज्ञ को फीजी भेजने के लिए।

कौंसिल ने आठ वोट के मुकाबले में पच्चीस वोट से बजट को स्वीकार किया। कुछ मेम्बर गैर-हाजिर थे जब वोट लिया गया।

सम्भव है विरोधी दल सत्तारूढ़ सरकार में शामिल हो जाय ?

"इमानदार तथा सच्चा" सहयोग सरकार को प्रदान करने के लिए चीफ मिनिस्टर, रातू मारा ने विरोधी दल की भूरी-भूरी प्रशन्सा की सोमवार ६ दिसम्बर को।

आप ने कहा की दोनों दलों के बीच वाले मत-भेदों को मिटाने के लिए हमें कार्य करना चाहिए। हो सकता है कि विरोधी दल सत्तारूढ़ सरकार में शामिल हो जाय जैसे कि कुछ अन्य देशों में किया गया है।

चीफ मिनिस्टर ने कहा कि जातिवाद, विशेषकर यूरोपियन पूंजी के खिलाफ, ने मेरे अंदर बेचैनी पैदा की है तथा मैं चिन्तित रहा कि किस तरह दो मुख्य जातियाँ को साथ लाया जा सकता है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि पश्चिमी संस्कृति जो भारतीय और काईवीतियों के सम्बन्ध के बीच की कड़ी है उसे तोड़ा नहीं जाएगा।

उन्होंने कहा कि मैं जिम्मेवार रहा उस पर्चे के लिए जिसे पब्लिक रिलेशन्स ऑफिसर ने निकाला था।

रातू मारा ने कहा कि मैं इस बात से सहमत हूं कि काईवीती जमीनों के पोत को सुधारा जाए तथा मिनिस्टर फोर फीजीयन एफेयर्स एण्ड लोकल गवर्मेन्ट ने एक कार्यक्रम को शुरू किया है पोत को सुधारने के लिए जहां सम्भव हो सके।

उन्होंने कहा कि स्थानीयकरण के अन्तर्गत काईवीतियों और भारतीयों की पदों की संख्या बराबर करना चाहिए।

रातू मारा ने कहा कि कुछ देशों में हिन्दुस्तानी दूसरों के साथ मेल

कम यात्री

इस साल के प्रथम आधे हिस्से की तुलना में इस साल के दूसरे आधे हिस्से में फीजी आने वाले यात्रियों की संख्या घट गई है।

जून तक विदेशी यात्रियों की संख्या में वृद्धि रही २८ प्रतिशत तक लेकिन इस वृद्धि को जारी नहीं रखा गया है तथा अब यह है ९७.५ प्रतिशत पिछले साल वाले इसी समय के मुकाबले में।

खुश रहो एहले वतन सब को मुबारक ईद हो

फीजी से प्रकाशित साप्ताहिक पत्र 'फीजी समाचार'

'Fiji Samachar' a weekly Hindi newspaper published from Fiji.

சமாசார படங்கள் | तसवीरी अख़बार

TASWIRI AKHBAR

تصویری اخبار

प्रति मास में दो बार प्रकाशित ॥

ہر مہینہ میں دو بارہ شائع ہوتا ہے ۔

மாதம் இருமுறை ப்ரசுரிக்கப்படும்

1 October, 1919. | Published Twice a Month. | No. 7.

लन्दन में भारतीय सिपाहियों की संधि तथा विजयसंबन्धि नगरयात्रा.

THE PEACE AND VICTORY MARCH OF INDIAN TROOPS THROUGH LONDON.

संधि तथा विजय उत्सव. लन्दन में भारतीय सिपाही.

THE PEACE AND VICTORY CELEBRATIONS: INDIAN TROOPS IN LONDON.

एक अङ्गरेजी स्त्री समीप से गुजरते हुए भारतीय सिपाहियों का पुष्पों से स्वागत कर रही है.

AN ENGLISHWOMAN GIVES FLOWERS TO THE INDIAN SOLDIERS AS THEY PASS.

सिपाही विशाल एडमिरलटी आर्च के नीचे से गुजर रहे हैं; बकिंघम महल की ओर से आनेवाली सड़क माल रोड का यह द्वार है.

TROOPS PASSING BENEATH THE GREAT ADMIRALTY ARCH, THE ENTRANCE TO THE MALL WHICH LEADS TO BUCKINGHAM PALACE.

श्री सम्राट् एक गोरखा सिपाही से हाथ मिला रहे हैं. इस सिपाही ने सब से बड़े सांग्रामिक सम्मान यानि विक्टोरिया क्रोस को उपलब्ध किया है.

HIS MAJESTY THE KING-EMPEROR SHAKES HANDS WITH A GURKHA SOLDIER WHO HAS WON THE HIGHEST WAR HONOUR, THE VICTORIA CROSS.

ब्रिटेन से प्रकाशित 'तस्वीरी अखवार', 1 अक्टूबर 1919

'Tasviri Akhbar', a Hindi newsletter published from Great Britain, 1 October 1919.

अनुक्रमणिका 'प्रवासिनी' मई 1966

शुभकामनाएं	2	उपराष्ट्रपति-डा. ज़ाकिर हुसैन गृहमन्त्री - श्री गुलज़ारीलाल नन्दा रक्षामन्त्री - श्री यशवन्तराव चव्हाण
"	३	नोबल शान्ति पुरस्कार विजेता-फादर पिअर
श्रद्धांजलियां (वीर सावरकर; उदयशंकर भट्ट)	५	धर्मेन्द्र गौतम
सदरे महफ़िल (कविता)	६	गुलाम रब्बानी 'तावाँ'
अमन का पुजारी (कविता)	७	अब्दुल 'अलीम' सद्दीकी
सरदार भगतसिंह	८	कुमारी कान्ता पटेल
नेता जी सुभाषचन्द्र बोस	९	श्री कुमुद रंजन मित्रा
सम्पादकीय	१२/१३	
विज्ञान वार्ता (भूमिका लेख)	१५	रमेश शुक्ल
प्रियतमा (कहानी)	१६	कृष्ण निभावन
'---- राह में इन्सान है'	१८	श्रीमती कान्ति वधवा
सम्पादक के नाम पत्र	२०	श्री बी. जुत्सी
रो न पागल मन मेरे (कविता)	२२	श्रीमती पुष्पा भार्गव
कला सज्जा और मुख पृष्ठ		कुमारी अनिला वडगामा
हिन्दी प्रचार परिषद - प्रतीक, (कला और डिज़ाइन)	२४	कुमारी कान्ता पटेल

सम्पादक:- धर्मेन्द्र गौतम
सहसम्पादक: कान्ति वधवा
कलासम्पादक: अनिला वडगामा
पत्रव्यवहार का पता:
हिन्दी प्रचार परिषद
७०, ग्राफटन वे,
लन्दन डब्ल्यू-१

All the work in this magazine is written in hand by Mrs. Kanti Wadhwa and printed by Banim Publications Ltd. Publishers: Hindi Prachar Parishad, 70 Grafton Way, London W-1. (TEL. EUSTON 5175)

जवाहरलाल नेहरू

२७ मई को हमारे स्वर्गीय नेता जवाहरलाल नेहरु की दूसरी पुण्यतिथि है। प्रवासी भारतीय निरन्तर उनकी जन्म और पुण्यतिथिओं से प्रेरणा लेते रहेंगे।

यह कविता भारत के सुप्रसिद्ध कवि गुलाम रब्बानी तावाँ साहब ने २८ मई १९६४ को लिखी थी।

सदरे महफ़िल

फूल रंजीदा सबा ग़मगीन चमन अफ़सुर्दा है
आज 'तावाँ' अन्जुमन की अन्जुमन अफ़सुर्दा है,
एक दीवाना था वह भी अपने रस्ते चल दिया
सोग में डूबा है सहरा और बन अफ़सुर्दा है,
जिसमें दम से वादिए गंगोजमन थी पुर बहार
उसके ग़म में वादिए गंगोजमन अफ़सुर्दा है.
दफ़्फ़तन दैरोहरम पर एक क़यामत ढल गई
शेख़ की आंखों में नम है बरहमन अफ़सुर्दा है,
सदरे महफ़िल उठके इस महफ़िल को सूना कर गया
राग बरसाता है फ़ज़ाओं से वतन अफ़सुर्दा है।

गुलाम रब्बानी 'तावाँ'

'पुष्प की अभिलाषा'

चाह नहीं, मैं सुरबाला के गहनों में गूंथा जाऊं,
चाह नहीं प्रेमी-माला में बिंध प्यारी को ललचाऊं,
चाह नहीं सम्राटों के शव पर हे हरि डाला जाऊं,
चाह नहीं देवी के सिर पर चढ़ भाग्य पर इठलाऊं,
मुझे तोड़ लेना बनमाली! उस पथ में देना तुम फेंक।
मातृ-भूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जावें वीर अनेक।

पं. माखनलाल चतुर्वेदी

लंदन से प्रकाशित पत्रिका 'प्रवासिनी'

'Pravasini', a Hindi Magazine published from London.

विश्व के विभिन्न देशों से प्रकाशित होने वाली हिंदी पत्रिकाओं की एक झलक

A Glimpse of Hindi Magazines being published from various parts of the World

विश्व के विभिन्न देशों से प्रकाशित होने वाली हिंदी पत्रिकाओं की एक झलक

A Glimpse of Hindi Magazines being published from various parts of the World

जापानी लोगों द्वारा लिखित हिन्दी पत्रिका

प्रथम अंक, सितम्बर 1980

ज्वालामुखी

सम्पादक :
योशिआकि सुज़ुकि

जापान से प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'ज्वालामुखी'

'Jvalamukhi', a Hindi Magazine published from Japan.